'अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी'

-डॉ० यशोधरा राठौर

समसत्र -4
इकाई -3

भाषा की यह खासियत है कि वह अनुभूतियों, संवेदनाओं, विविध विचारों में घुलकर समय सीमा और इतिहास की वर्जनाओं को तोड़ते हुए बृहद विश्व से संबंध स्थापित कर लेती है और विश्वव्यापी चेतना से जुड़कर नयी दिशाओं का आगाज करती है। दरअसल भाषा को लेकर संवादों का सिलसिला सदैव ही व्यापक एवं असीम रहा है।

जहां तक हिंदी की वैश्विक स्वीकृति का सवाल है तो भारत की वर्तमान विकासमान राष्ट्रीय हैसियत वैश्विक परिदृश्य में विश्वभाषा बनने की प्रक्रिया में है यदि हम विगत तीन शताब्दियों पर दृष्टि डालें तो भारत और चीन विश्व की सर्वाधिक तीव्र गति से उभरने वाली अर्थव्यवस्थाओं में है जिसके कारण विश्व स्तर पर इसकी स्वीकार्यता एवं महत्ता नए आयामों को दिशा प्रदान करती हुई प्रतीत होती है जिसमें इनकी भाषा की अभिव्यक्ति की चमक को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता।

विश्व को ज्ञात है कि हिंदी वर्ग-जाति रंगभेद आदि से कहीं ऊपर विश्व की एकता अखंडता बंधुत्व से मानवीय आदर्शों को स्थापित करने वाली मधुसिक्त भाषा है जिसमें केवल देश ही नहीं विश्व के शाश्वत मूल्यों को कालजयी बनाने की क्षमता है।

उपयुक्त कथन महज हिंदी की महती विशेषताओं को रेखांकित नहीं करता वरन हिंदी की वैश्विक स्वीकृति पर भी व्यापक प्रकाश डालता है विश्व विज्ञान एवं मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों को सर्वदा जनहितार्थ ग्रहण करने की उदार सोच के कारण हिंदी विश्व की समृद्ध,

स्वीकृत एवं सार्थक भाषा है। दुनिया को पता है कि भारत के पास उच्चतम संस्कृति, प्रचुर प्राकृतिक संपदा एवं युवतर मानव संसाधन है जिससे यह भविष्य में उत्पादन का बड़ा स्त्रोत भी बन सकता है। विकासमान अंतरराष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान भी हो सकता है।

नामवर जी का कहना है कि "आज भारत विश्व बाजार का हिस्सा होने में महत्वपूर्ण घटक की भूमिका अदा कर रहा है जिसमें हिंदी सेतु रूप में कार्य कर रही है अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत बनाने के लिए हिंदी भाषा को और समृद्ध बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।"

विश्वनाथ त्रिपाठी कहते हैं कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की भाषायी अस्मिता देश के सांस्कृतिक सामाजिक महत्व को भी दर्शाती है इस दृष्टि से हिंदी की स्थिति बेहतर समझी जानी चाहिए और इसके प्रचार प्रसार का व्यापक प्रयास किया जाना चाहिए।

चित्रा मुद्गल के अनुसार भाषा की भूमिका किसी भी विकसित या विकासशील राष्ट्र के लिए इसकी प्रौद्योगिकी ज्ञान-विज्ञान इतिहास कला दर्शन एवं समृद्धि सांस्कृतिक वैविध्य की सतत पल्लवन एवं उन्नयन से जुड़ी होती है एवं उसकी पहचान की पर्याय होती है अगर अंग्रेजी भाषा के मायने इंग्लैंड है तो हिंदी का मतलब है-"भारत"। दरअसल जो भारत देश की धरती पर जन्म लेकर युवा हो रहा है उसमें हिंदी विश्व भाषा बंद कर सब को एकजुट रखने की क्षमता रखती है।

विश्वनाथ त्रिपाठी का मानना है कि हिंदी संपूर्ण विश्व में बोली जाने वाली भाषा है क्योंकि हिंदी भाषियों का फैलाव पूरी दुनिया में है। दरअसल भारत की समाज व्यवस्था एवं भारतीय उच्चतर नैतिक मूल्यों के प्रति जिज्ञासा के कारण बहुत से विदेशी अध्येता हिंदी के प्रति गहराई से आकर्षित होते हैं। दुनिया के सभी महत्वपूर्ण देशों के

महत्वपूर्ण विद्यालयों में हिंदी भाषा साहित्य के विभाग स्थापित हैं एवं वहां अच्छी खासी संख्या हिंदी पढ़ती है। वस्तुतः भारतीय भाषाओं में हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसमें सबसे ज्यादा विदेशी भाषाओं का साहित्य अनुदित होता है। प्रवासी भारतीयों के द्वारा हिंदी की पत्र पत्रिकाएं बड़ी संख्या में निकाली जा रही है। हिंदी लेखक पुरस्कृत किए जा रहे हैं। इन सबको उल्लेखनीय वैश्विक संदर्भों से जोड़कर देखा जा सकता है।

राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा था कि "भाषा का प्रश्न केवल सांस्कृतिक प्रश्न नहीं है, अवस्था विशेष में यह राजनीतिक एकता से भी जुड़ जाता है।"

श्री एस. शेषरत्नम का मानना है कि प्रयोक्ताओं की संख्या की दृष्टि से हिंदी भाषा विश्व की दो प्रमुख भाषाओं में एक है। यह दुनिया की सबसे लोकप्रिय एवं सरल भाषा है यह जैसे बोली जाती है वैसे लिखी भी जाती है।

कहा जा सकता है कि विश्व में हिंदी के पठन पाठन प्रचार प्रसार के कारण कहीं विशुद्ध रूप में ज्ञान की पिपासा कहीं अपनी अस्मिता बनाए रखने की चिंता कहीं राजनीतिक प्रचार या सामरिक लाभ दृष्टि कहीं सांस्कृतिक संबंधों को दृढतर बनाने की सोच, कहीं व्यक्तिगत लाभ के दृष्टिकोण से हिंदी में अध्ययन एवं अध्यापन विविध रूपों में हो रहा है जो इसके विस्तृत वैश्विक स्वरूप एवं संदर्भ को उद्घाटित करता है एवं इसकी अनिवार्य स्वीकार्यता एवं संभावनाओं की प्रबलता को प्रकाश में लाता है।

वर्तमान में विदेशों में हिंदी की अभिवृद्धि मूलतः दो रूपों में हो रही है प्रथम के अंतर्गत वह देश है जहां के लोग हिंदी को विश्व भाषा के रूप में सीखने और पढ़ने की चाहत रखते हैं जिसके अंतर्गत रूस, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड,जर्मनी, इटली, बेल्जियम, फ्रांस, रोमानिया, जापान, नार्वे, स्वीडन, पोलैंड, ऑस्ट्रेलिया, मेक्सिको, चेकोस्लोवाकिया आदि देश शामिल किए जा सकते हैं। दूसरे क्रम में वे देश आते हैं जहां प्रवासी भारतीय एवं भारतवंशी बड़ी संख्या में निवास करते हैं एवं

जिनकी मातृभाषा हिंदी रही है जैसे मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, बर्मा, थाईलैंड, नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका आदि है जिनमें हिंदी का रचना संसार पर्याप्त विपुल है।

डॉ० कामता कमलेश का मानना है कि विगत वर्षों में हिंदी भाषा का अध्ययन विश्व स्तर पर निरंतर प्रगति की दिशा में है। विश्व स्तर पर विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन इसकी प्रगति को बल प्रदान कर रहा है और भिन्न ह्रदयों को जोड़ने का कार्य कर रहा है।

सन 1973 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के विकास का संकल्प लिया एवं अब तक आयोजित 10 विश्व हिंदी सम्मेलनों द्वारा हिंदी के वैश्विक संबंधों को सुघढ करने को निरंतर प्रयत्नशील है। भारतीय विदेश मंत्रालय, भारत सरकार भी अपने निरंतर सहयोग द्वारा हिंदी के संवर्धन की दिशा में कार्यरत है। विश्व हिंदी पत्रकारिता भी हिंदी भाषा को अग्रणी बनाने का सतत प्रयास कर रही है। कविता, कहानी जैसी मौलिक विधाओं के साथ-साथ अनूदित रचनाएं विज्ञापन आदि भी छापे जा रहे हैं। इस संदर्भ में फिजी में छपने वाले हिंदी शांतिदूत मील का पत्थर साबित हो रही है। मॉरीशस से छपने वाली पत्रिका 'बसंत', इंग्लैंड की 'पुरवाई', अमेरिका से प्रकाशित 'सौरभ'एवं 'विश्व विवेक' इसके ज्वलंत उदाहरण है। यह भी हर्ष का विषय है कि हिंदी साहित्य का अनुवाद मूल भाषाओं में विदेशी साहित्यकारों द्वारा किया जा रहा है यह भारतीय संस्कृति के प्रति उनका विश्वास नहीं तो और क्या है? इसी प्रकार प्रिंट मीडिया, भूमंडलीकरण की चुनौती से जूझकर उसके अनुकूल ढालने का प्रयास कर रही है।

काका साहब कालेकर ने कहा कि सच तो यह है कि प्रवासी भारतीय हिंदी भाषा को सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता की तरह लेते हैं और इसकी सुरक्षा के लिए तत्पर रहते हैं यदि हम अमेरिका, यूरोप, रूस आदि देशों में शैक्षिक अभिरुचि के साथ प्रयोजन परक भी दृष्टि भी

देखी जा सकती है। यह गौर करने की बात है कि अंतर्राष्ट्रीय पटल पर हिंदी प्रतिष्ठित ही नहीं मान्यता प्राप्त भाषा भी है परंतु आवश्यक है कि विदेशों में हिंदी शिक्षण का मूल्यांकन समय-समय पर होता रहे एवं इसके विश्वव्यापी प्रसार के लिए तकनीकी एवं पारिभाषिक कोष एवं संदर्भ ग्रंथ भी सुगमता से उपलब्ध कराई जा सकें।

अतिरिक्त विश्व मंचों पर हिंदी की संबद्धता गीत-संगीत एवं फिल्मों से भी जुड़ी हुई है। केंद्रीय हिंदी संस्थान में में 70 देशों के विदेशी छात्रों ने अस्पष्ट किया कि वे हिंदी फिल्मों, गानों, टीवी आदि से हिंदी सीखी है। सन् 55 के बाद फिल्मों एवं टीवी के कार्यक्रमों ने विश्व स्तर पर लोकप्रियता प्राप्त की है। हिंदी को विश्व पटल पर ख्याति दिलाने में हिंदीतर भाषियों का भी महती स्थान है देश में व्याप्त विभिन्न हिंदी संस्थाएं जैसे उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा आदि का नाम लिया जा सकता है।

प्रोफेसर कृष्ण कुमार गोस्वामी के शब्दों में अंतरराष्ट्रीय संदर्भों में हिंदी सांस्कृतिक एवं सामाजिक अंत: शांति के साथ-साथ अपनी प्रयोजन परक भूमिका में संलिप्त है। वास्तव में हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका कोई दिवास्वप्न नहीं बल्कि विश्व मानव की एक वास्तविकता है। जाति, धर्म, वर्ग एवं राष्ट्र की सीमा से परे हिंदी प्रेम,शांति,अहिंसा, मित्रता, सौहार्द, सहिष्णुता, सद्भावना की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है जो संपूर्ण मानव जाति को जोड़ने का संदेश देती है।

हिंदी के चौमुखी प्रगति एवं राष्ट्रीय स्तर इसमें सतत विकास के लिए आधुनिक समस्त संसाधनों माध्यमों का योगदान है।" आज जब समूची दुनिया एक क्लिक पर सिमट आई है तब इंटरनेट का जिक्र मुनासिब होगा। कंप्यूटर पर हिंदी पढ़ना लिखना आसान हो गया है। हिंदी ब्लॉगरों की बढ़ती तादाद से हिंदी के दायरे बढ़े हैं। हिंदी में संपूर्ण साहित्य को इंटरनेट पर देखा जा सकता है। हिंदी सीखने सिखाने वालों की वेबसाइट्स हिंदी

सेवियों के प्रति अनुराग ही तो है।

प्रसिद्ध आलोचक डॉ रामविलास शर्मा ने लिखा है हिंदी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण इसका लचीलापन ही है जो उसे दूसरी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने और युग एवं कालखंडों के अनुरूप खुद का परिष्कार करने की क्षमता रखती है। यही इसके उज्जवल भविष्य का सुखद संकेत भी है। वस्तुतः प्रतिपल परिवर्तित होती दुनिया के भौतिक परिदृश्य पर गौर करें तो पाएंगे कि वर्तमान सदी पूर्व की सदियों से ज्यादा चमत्कारिक उपलब्धियों वाली है। विज्ञान और तकनीक ने पूरी दुनिया को एक विश्वग्राम में तब्दील कर दिया है एवं भौगोलिक दूरियों का अब कोई अर्थ नहीं। वर्तमान विश्व व्यवस्था आर्थिक एवं व्यापारिक आधार पर पुनर्गठन की प्रक्रिया से गुजर रही है। ऐसी स्थिति में विश्व के सशक्त राष्ट्रों का क्रम बदलना भी लाजमी है। आज भारत और पड़ोसी देश चीन सबसे तेज गति से उभरती अर्थव्यवस्था में से हैं जिसकी स्वीकार्यता एवं महत्ता बढ़ी है। भावी वैश्विक संरचना में यह देश उत्पादन में बढ़े स्त्रोत बन सकते हैं इन परिस्थितियों में भारत की वर्तमान विकासमान अंतरराष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए किसी वरदान से कम नहीं दरअसल हिंदी भाषा वैश्विक संदर्भ सभी विशेषताओं से पूर्ण है।

वस्तुतः हिंदी तमाम आग्रहों से मुक्त कृतकारी भाषा है जो विश्व स्तरीय समस्याओ को समझने का सामर्थ्य तो रखती है साथ ही साथ उसके निराकरण का मार्ग भी जानती है। तमाम परीक्षणों के बाद हिंदी की व्यावसायिक स्वीकार्यता का कारण इसका ऐतिहासिक स्वरूप है जिससे यह विश्व के विराट पटल पर नवीन प्रतिबिंब की तरह परिलक्षित होती है। हिंदी की शब्द सेवा 2500000 से भी कहीं ज्यादा है। विश्व की सर्वाधिक दीर्घ कृषि शब्दावली हिंदी में ही है। संख्या बल के आधार पर भी यह विश्वभाषा है। हिंदी का अन्यतम वैशिष्ट्य है कि उसमें संस्कृत के उपसर्ग एवं प्रत्यय से शब्द निर्माण की अभूतपूर्व क्षमता है जिसे संपूर्ण विश्व जानता है। आवश्यकतानुसार हिंदी परिमार्जन की प्रक्रिया से भी गुजरती है जिससे उसकी संरचना संबंधी जटिलता कम होती है। हिंदी के वैश्विक संदर्भों में

उपग्रहों, चैनलों, विज्ञापनों, बहुराष्ट्रीय निगमों एवं यांत्रिक सुविधाओं का भी स्थान है। हमारे देश के नेतागण अंतरराष्ट्रीय मंचों से हिंदी का प्रयोग कर इसके महत्व को निहारते रहे हैं।

हिंदी विश्व के प्रायः महत्वपूर्ण देशों में विश्वविद्यालयों में अध्ययन में भागीदार रही है। एकल अमेरिका के 50 से अधिक ऐसे शिक्षण संस्थान है, आज हिंदी विश्व को एकाग्र करने की भूमिका अदा कर रही है फिर भी आश्चर्य की बात है कि अब तक यह संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बनने में समर्थ नहीं हो सकी है। हिंदी के विकास की विश्वव्यापी संभावनाओं के बावजूद आवश्यकता है समग्र एवं समवेत ईमानदार प्रयास की। हिंदी को वैश्विक संदर्भों से अटूट रूप से जोड़कर इसे विश्वग्राम की भाषा की गरिमा प्रदान करने हेतु दृढ़तम इच्छाशक्ति एवं कृतसंकल्पित होने की आवश्यकता है जो सर्वथा लोकमानस के हित में ही है।

-डॉ० यशोधरा राठौर
स० प्राध्यापिका